यहीं कहीं है रास्ता

कहानी

शशि खरे

म.न. 42 हर्शित नगर, मोहबा बाजार,
रायपुर, मो. 8878494714

दिनमान नामक पत्रिका का समापन समारोह लखनऊ में आयोजित किया गया था। लगभग पचास वर्षों तक प्रत्येक पढ़े-लिखे परिवार की प्राथमिक आवश्यकताओं की सूची में सम्मिलित रहने वाली अत्यन्त लोकप्रिय पत्रिका के बन्द होने से साहित्य जगत में बवण्डर सा आ गया था। दूर-दूर से लोग आये थे। अन्त में फिर से शीघ्र प्रकाशित करने का संकल्प लेकर समापन हुआ।

अमृता और मेहताब भी इसी कार्यक्रम में आई थी। आज वापिसी थी। वापिस जाने के लिये दोनों पूरे दो घण्टे पहले स्टेषश आ गई। टैक्सी वाले ने बहुत दूर उतारा था और यह व्यवस्था ट्रैफिक को दुरुस्त रखने के लिये पुलिस ने कर रखी थी। मई महिने का तपता लखनऊ; गर्मी से बेहाल लोग, रेलवे प्रळासन की व्यवस्था बनाए रखने की लाख कोशिशों पर पानी फेरता भीड़तंत्र। रेल्वे ट्रैक को

मेहताब ने कैमरा निकाला और सेट करने लगी। लगेज, बैग, सूटकेस, टीनपेटियां, सुतली से बंधा हुआ बिस्तर, थैले, पानी की बोतलें एक के बाद एक पंक्तिबद्ध रखे हुए थी; रेलगाडी से भी ज्यादा लम्बी लाइन। ऐसा तो कभी देखा ना था, ये क्या माजरा है? जो भी हो फोटो तो खींच ही लूं

बख्श कर हर जगह पैर पसारे हुए यात्री । अमृता ने मेहताब के कान में चिल्लाकर कहा- पूछताछ में कुछ सुनाई नहीं दे रहा था, सो कुली, पुलिस, टी.टी.आई कुल चार लोगों से पूछकर पक्का पता कर लिया है; हमारी ट्रेन पुराने स्टेशन पर जो इससे लगा हुआ है,वहॉ पर आयेगी, अब चलें?

नये स्टेशन का यह हाल है, पुराने का क्या होगा? पुराना स्टेशन बाहर से स्टेशन जैसा लग ही नहीं रहा था। दोनों पूछते हुए अन्दर गईं। यहां तो नये से अधिक बड़े प्लेटफार्म, और दूर-दूर तक खाली जगह, हरियाली और बहुत स्वच्छता थी। मेहताब ने कैमरा निकाला और सेट करने लगी। लगेज, बैग, सूटकेस, टीनपेटियां, सुतली से बंधा हुआ बिस्तर, थैले, पानी की बोतलें एक के बाद एक पंक्तिबद्ध रखे हुए थी; रेलगाडी से भी ज्यादा लम्बी लाइन। ऐसा तो कभी देखा ना था, ये क्या माजरा है? जो भी हो फोटो तो खींच ही लूं, तभी अचानक जैसे हवा से या जादू से जाने कहां-कहां से निकल कर लोग आ गये, अधिकांश लड़के थे, अपना सामान सहेजने लगे, और फिर सामने के ट्रैक पर मुंबई जाने वाली ट्रेन आ गई, अच्छा तो ये बाम्बे जाने वाले लोगों का सामान था ! पता नहीं क्यों हर जगह से लोग मुंबई ही क्यों जाते हैं, वहां ना जमीन है ना आसमान। भरपेट खाने लायक, रोजीरोटी तो अपने अपने गांव, शहर में मिल ही जाती होगी और वहां इन्सानों की तरह जीने का वातावरण भी होगा, स्वच्छ हवा, पानी, खुली जगह, नीला आसमान, शान्ति, हरियाली और एकाध तालाब या किसी नदी का घाट तो लगभग सभी स्थानों में होते ही हैं। रोटी कमाने का जुगाड़ लोग वहीं क्यों नही करते जहां अपना घर हो? अब इंसान रोटी नहीं पैसा कमाना चाहता है।

ट्रेन तो लखनऊ से ही शुरु होने वाली थी अतः वहीं खड़ी थी, परन्तु बन्द दरवाजों के साथ। गर्मी से बदहाल प्रतिक्षुक यहां वहां दुबके थे। बुकस्टाल के पास एक सम्भ्रान्त सज्जन किताबें छांट रहे थे। अमृता और मेहताब भी पहुंच गईं। पूरा स्टाल अंग्रेजी पत्रिकाओं और नये घटिया अंग्रेजी उपन्यासों से अटा पड़ा था। एक पुस्तक विक्रेता के सामने रखकर पैसे देते हुए वे सज्जन बोले इसके पैसे काट लो। अमृता और मेहताब की दृष्टि एक साथ पुस्तक पर गयी - नोबेलप्राइज विनर स्टोरीज। हमें भी देना एक प्रति, अमृता बोली। सॉरी मैम एक ही थी।

कोई बात नहीं हमारे बैग वैसे भी किताबों से भारी हो रहे हैं।

रेल्वे कर्मचारी रेलगाड़ी के दरवाजे खोलकर, ए.सी. चालूकर बाकी जांच पडताल कर रहे थे। गर्मी से परेशान लोगों ने अपनी बर्थ पर कब्जा किया। संयोग से अमृता मेहताब और उन सज्जन की सीट आसपास ही थी। शीघ्र परिचय और बातचीत होने लगी। वे बोले मेरा नाम इन्द्र नागपाल है, पेशे से डाक्टर हूं, अभी दस सालों से कनाडा में रहता हूं, पर जबलपुर का रहने वाला हूं और वहीं जा रहा हूं, अभी तो दिनमान के विदाई समारोह में आया था, बहुत दुःख हुआ मैं उसका आजीवन सदस्य था। दिनमान